किशनगढ़ लघु चित्रकला में प्रेम तथा प्रकृति का सौंदर्य अभिकल्पन

Manisha Khinchi
Research scholar and artist
University of rajasthan
email: manishakhinchi87@gmail.com

सारांश

राजस्थानी लघु चित्रकला में किशनगढ़ चित्रशैली अपने उल्लेखनीय चित्र संयोजनों, सुक्ष्म रेखांकन, सौंदर्य परिकल्पना एवं वर्ण विन्यास के लिये विशेष स्थान रखती है। इस कला शैली को मारवाड उपशैली के अंर्तगत माना गया है। वल्लभ सम्प्रदाय तथा कृष्ण भक्ति की अजस्त्र धारा के मध्य विकसित हुई यह चित्रशैली, नागरीदास की बनी–ठनी के सौंदर्य की माधुरी में पल्लवित होती हुई, प्रेम तथा प्रकृति के अत्यंत रसिक एवं मधुरतापूर्ण प्रगटीकरण के साथ विश्व प्रसिध्ध चित्रशैली के रूप में पहचानी जाती है।

मुख्य शब्द

प्रेम, प्रकृति, राधा–कृष्ण, नायक–नायिका, राग–रागिनियां, राधा–माधव की प्रेम लीला
वल्लभ संम्प्रदाय, पृष्टिमार्ग,

प्रस्तावना

किशनगढ़, राजस्थान प्रदेश के जोधपुर, अजमेर, जयपुर तथा शाहपुरा के निकट छोटी–छोटी पहाड़ी श्रृंखलाओं वाले प्रदेशों से घिरा हुआ एक नगर है, जो गुण्डालिया झील के निकट स्थित है। किशनगढ़ राज्य की स्थापना जोधपुर महाराजा के छोटे भाई **किशन सिंह** ने 1609–15 ई. के मध्य की थी।

किशन सिंह के पश्चात उसके उत्तराधिकारियों में **महाराजा स्वरूप सिंह** (जो कि शाहजहां के प्रिय थे) तथा **मानसिंह** रहे हैं परंतु किशनगढ़ में चित्रकला का विकास **राजसिंह** 1706–48 ई. के शासनकाल के दौरान हुआ। राजसिंह स्वयं भी चित्रकार तथा वल्लभ सम्प्रदाय के पृष्टिमार्गी विचार धारा के अनुयायी थे। इसलिए इनके समय से ही यहां की चित्रकला में कृष्ण लीला तथा राधाकृष्ण भक्तिवादी विचारधारा से प्रेरित चित्रों की निर्मिती होती दिखाई देती है। राजसिंह के पश्चात किशनगढ राज्य का उत्तराधिकार **राजा सावंत सिंह** (1699–1764) के हाथों में आ गया। जिन्हें प्रमुख रूप से किशनगढ़ चित्रकला का उद्धारक तथा संरक्षक का दर्जा दिया जाता है। **राजा सावंत सिंह** स्वयं भी न केवल एक उत्कृष्ट चित्रकार थे अपितु कला संरक्षक भी थे। वह **नागरी दास** के नाम से गहरे आध्यात्मिक प्रेरणा के कवि के रूप में अपनी कविताओं की रचना किया करते थे। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **बिहारी चन्द्रिका** में नागरी दास के नाम से छंदों की रचना की जिसके आधार पर इस समय के लघु चित्रों में कृष्ण एवं राधा के महान प्रेमाकर्षण तथा लीलाओं की एक ऐसी नवीन शैली ने जन्म लिया जो अपनी भव्यता के लिए आज भी पहचानी जाती है।[1]

[1] Daljeet : The Glory of Indian miniatures,Ghaziabad,1988, Page No. 11

किशनगढ़ चित्रकला को प्रकाश में लाने का श्रेय अलीगढ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर तथा बाद में लाहौर गवन्मेंट कॉलेज के लेक्चरर रहे प्रोफेसर डॉ. एरिक डिक्शन ने 1943 ई. को जाता है। जो उस समय अजमेर मेयो कॉलेज में आये हुये थे। उन्होंने यहां की संस्कृति को समझने का प्रयास किया और तब उन्होंनें इस उत्कृष्ट तथा अनोखी कला शैली से समस्त संसार को अवगत कराया।[2]

प्रकृति में जितनी भी भावना एवं स्वभाव हैं उनमें प्रेम को सर्वोपरि माना गया है। प्रेम, घृणा तथा क्रोध को नष्ट करता है। प्रेम ही संसार के समस्त कष्टों तथा समस्याओं का अंतिम निराकरण है, जिसे जितना विकसित किया जायेगा उतना ही संसार में शांति तथा समरसता को स्थायित्व मिल सकेगा। प्रेम जीवन के लिए एक ऐसा तत्व है जिसके बिना जीवन की चक्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ये स्वीकार करने योग्य है कि प्रेम में प्राच्य या पाश्चात्य जैसा कुछ नहीं है। सांसारिक तथा दिव्य प्रेम मानव की आत्मा को आध्यात्मिक तथा मानसिक उत्कृष्टता की ऊंचाइयों तक ले जाने में सक्षम है। वहीं सम्पूर्ण विश्व की कलाऐं प्रेम के इर्द गिर्द ही घूमती है फिर चाहे वे मूर्तिकला, वास्तुकला, संगीत, नाट्य या फिर चित्रकला ही क्यों न हो। इन समस्त कलाओं की रचना के पीछे मूल प्रेरणातत्व प्रेम ही रहा है।

राजस्थानी लघु चित्र शैली में राग–रागिनियों जैसी संगीत की मान्यताओं पर आधारित चित्रण विशेष रूप से दिखाई देता है। रागमाला की अवधारणा से तात्पर्य है 'रागों की माला' और रागिनी कला के तीन रूपों जैसे चित्रकला, संगीत एवं कविता का एक बहुत ही रचनात्मक मिश्रण है। यह संगीत का दृश्य रूप है जिसका कला की दुनिया में कोई समानता नहीं है। यह राग रागिनियां परिवार व्यवस्था पर आधारित है, जिनमें कुछ रागों को पुरूष तथा कुछ को स्त्री मानकर उनकी वंश परम्परा मानी गई है। 6 रागों की 36 पत्नियां, उनके 48 पुत्र, जिनकी 2–2 पत्नियों से उन्होंने पुनः 60 पुत्र–पुत्रियों को जन्म दिया। जिससे परिवार चक्र बढ़ता है इन्हीं के आधार पर स्तुति व गायन के सूत्र निर्धारित होते थे। हालांकि विशुद्ध रूप से एक संगीत सूत्र में यह प्रणाली प्रेम पर आधारित है फिर चाहे वो मानव हो या दैवीय।

रागमला, आधुनिक समय में चित्रकारों, संगीतकारों और कवियों की तरह अब इतनी स्वीकार्य एवं प्रासंगिकता नहीं रखती है लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि मध्य कालीन समय में इन्हें, सख्त मानदण्डों का पालन करते हुए गहन अध्ययन, अनुभव एवं अनुसंधान द्वारा स्थापित संश्लेषण का कलाओं की निर्मिति का समृद्ध और अत्यधिक कल्पनाशील तरीका माना जाता था। इसी तरह राजस्थान लघु चित्र शैली में नायिका भेद, लोक कलाएं, प्रेम कहानियों, महाकाव्य और साहित्यिक रचनाएं जैसे रसिक प्रिया, गीत गोविंद, कृष्ण रूकमणी री बेली, ढोला मारू रा दूहा और अन्य कई रचनाएं चित्रकला परम्परा में प्रेम को प्रेरित और समृद्ध करती रही हैं।[3] किश्नगढ लघुचित्र शैली में भी उपरोक्त वर्णित मान्यता को ही चित्रण का आधार माना गया है।

[2] Sumahendra : Splendid style of Kishangarh Painting, jaipur,1995, Page No. 39

[3] Love portrayed paintings of rajasthan, JKK series of portfolio No. 1, JKK Jaipur Page No. 1-2

किशनगढ़ लघु चित्र शैली में राग–रागिनियों के अतिरिक्त मुख्य विषय विशेष रूप से श्याम–श्यामा के रति भाव का विभिन्न आयामों का दिग्दर्शन, राधा माधव की प्रेम लीला, प्रिय।–प्रियतम का मधुर मिलन तथा भाव चित्रण ही कलाकारों को अभिष्ट रहा है। अन्य कृष्ण भक्त कवियों की रचनाओं से प्रेरित होकर गीत गोविंद, भागवत पुराण एवं रूकमणी हरण, नागरीदास के पद, दरबारी वैभव आदि का भी बहुत चित्रण हुआ है। इस चित्र शैली में उत्सव, नौका विहार प्रेम और प्रकृति का बाहुल्य है जिन पर कलाकारों ने अपना जादू बिखेरा है।[4]

किशनगढ़ लघु चित्रकला में प्रेम तथा प्रकृति का प्रदर्शन कलाकारों तथा संरक्षकों की असीम प्रेमाशक्ति एवं कृष्ण आस्था का प्रतीक रहा है। इस शैली के चित्रों में प्रेमी–प्रेमिकाओं, नायक–नायिकाओं के चित्र प्रदर्शन अपनी विशेष पहचान रखते हैं। यहां प्रायः नायक–नायिका भेद पर आधारित चित्रों में नायक तथा नायिकाओं को सुंदर उपवनों, वनों, सुंदर नौका विहार एवं जल विहार में मग्न दर्शाया गया है। इन चित्रों के श्रेष्ठ उदाहरणों में **लाल बजरा, प्रेम की क्रीडा** नामक चित्र प्रमुख माने गये हैं। किशनगढ़ में चित्रित किये गये नौका विहार जैसे मनोहर चित्र, राजस्थान में अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलते हैं। इन प्रेम चित्रों में चित्रकार ने प्रेमी एवं प्रेमिकाओं की प्रेम क्रीडाओं में विशेष आशक्ति दर्शाई है तथा उनके मिलन स्थलों के लिए विशेष सुंदर कुंजों लतिकाओं की झुरमुट तथा सघन वृक्षों से आच्छादित पीठिकाओं एवं भवनों का चयन किया है जिसमें चित्र का समुच्य वातावरण प्रेममयी प्रतीत होता दिखाई देता है।

वहीं प्रकृति की बात करें तो किशनगढ़ शहर तथा रूपनगढ़ का प्राकृति परिवेश जिस प्रकार झीलों, पहाडियों, उपवनों और विभिन्न पशु–पक्षियों से युक्त है उसी अनुकूल उदीपन रूप में प्रकृति का चित्रण इस कला शैली में बहुत ही अनोखा हुआ हैं। दूर–दूर तक फैली हुई झीलें, झीलों के मध्य खेल करते हंस, बतख, जल मुर्गियां, सारस, वक तथा तैरती हुई नौकाएं, नौकाओं में प्रेमालाप करते राधा–कृष्ण, नायक–नायिकाओं का अंकन अत्यंत श्रेष्ठ प्रतीत होता है। उच्च अट्टालिकाओं कुंजों से झांकती श्वेत मुंडेरें, फव्वारे, केले के वृक्षों से घिरे भू–दृश्य तथा कमल दलों से ढंके जलाशय आदि सब कुछ कुल मिलाकर किशनगढ़ शैली के लघु चित्रों को मनोहर बना देते हैं।

प्रकृति के विस्तृत प्रांगण को उत्तम प्रकार से चित्रित करने का श्रेय किशनगढ़ शैली को ही जाता है।[5] झीलों, पहाड़ियों, हरित वन व बगीची तथा पक्षियों की चहचहाट वाला वातावरण को यहां के चित्रों में बहुत ही सरस प्रकार से उतरा गया है। यहां चित्रों में केले तथा कदली वृक्ष विशेषता के साथ चित्रित किये गये हैं। वहीं श्वेत संगमरमरी भवन वन हरिमीता उष्ण रंगों में चित्रित स्त्री–पुरूष, फव्वारे व तैरते सारस युगलों के चित्रण में मधुर रंग योजना प्रस्तुत होती दिखाई देती है। हाशियों का चित्रण यहां हरे तथा गुलाबी रंगों के खत में बनाया गया हैं।[6] किशनगढ़ चित्र शैली में निर्मित प्रकृति के सुंदर स्वरूपों की व्याख्या करते

[4] प्रताप रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, जयपुर, 2004, पृष्ठ संख्या 207
[5] नीरज जय सिंह : राजस्थानी चित्रकला और हिंदी कृष्ण काव्य, दिल्ली, 1976, पृष्ठ संख्या 43–44
[6] आर. ए. अग्रवाल : कला विलास, मेरठ, 1979, पृष्ठ संख्या 104

हुए रामगोपाल विजयवर्गीय ने लिखा है कि ''इन चित्रों की रूप माधुरी आंखों को लुभाकर इतना वशीभूत कर देती है कि पुनः इन चित्रों को देखने का मोह कला मरमज्ञों को होने लगता है।[7]

चित्र सं.–1 : किशनगढ़ लघु चित्रकला में निर्मित प्रकृति के प्रतीक चिन्ह।

किशनगढ़ के लघु चित्रों में रात्रि दृश्यों को अपनी विशेषताओं के साथ बहुलता में चित्रित किया गया है। इन दृश्यों के चित्रों में **दीपावली और दीप** का अत्यंत सुंदर उदाहरण हैं। वहीं चित्र में आकृतिओं का रेखांकन रंग योजना एवं विषय की अभिव्यक्ति में भी नवीनता दिखाई देती है। यहां राधा कृष्ण को तात्कालिका नायक–नायिकाओं के रूप देने की चेष्टा की गई है जिसमें नवीन प्रेम क्रीडाओं की कल्पना चित्रण का आधार बनी है। अंधियारी रात्रि के दृश्यों में हम पीली जगमगाती रोशनी देख सकते हैं। आमतौर पर रात के दृश्यों में कलाकार ने काले आकाश को नीले रंग से निर्मित किया है जिसमें नौकाओं के दृश्य तथा पेड–पौधों के समूहों से आच्छादित घरों को अत्यंत कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। इन रात्रि चित्रों में प्रायःआम, केला जामुन के दृश्य बनाये जाते थे। कलाकारों ने नदी को दर्शाने हेतु चांदी के रंग का प्रयोग किया है।[8] किशनगढ़ में निर्मित प्रेम आधारित चित्रों में चित्रकारों की कला कौशल के कारण विषय की सुंदरता तथा भाव अभिव्यक्ति और प्रबल हो गई है। पुरूष आकृति को प्रायः लम्बा, पतला तथा श्याम वर्णिय आकर्षक शरीर धारी दर्शाया गया है। वहीं स्त्रियों को गौरवर्णी नाजुक कमनीयता युक्त लम्बी पतली दर्शाया गया है। इन आकृतियों में कमर की रचना एकदम पतली की गई है।[9]

[7] आर. ए. अग्रवाल : कला विलास, मेरठ, 1979, पृष्ठ संख्या 105
[8] Chitralekha Singh : Drawings of Rajasthan,delhi, 1993, Page No. 87
[9] Neeraj Jain Singh : Splendor of Rajasthani Paintings,new delhi, 1991, Page No. 30

चित्र सं.–2 : राधा–कृष्ण के मिलन के क्षण, किशनगढ़, 1775 ई.,[10]

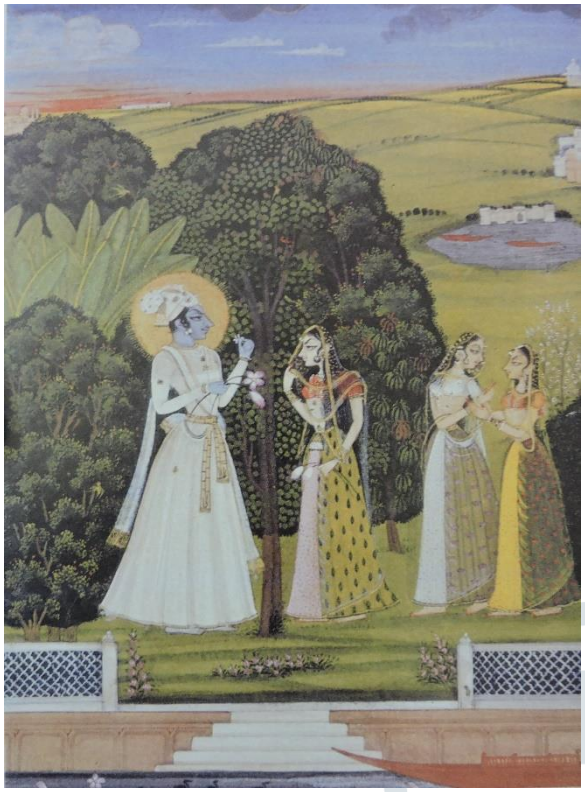

प्रस्तुत चित्र में नायक कृष्ण एवं नायिका राधा के बगीचे में मिलन के मनोहर क्षणों को दर्शाया गया है। मुख्य आकृति के पास में ही दो स्त्री परिचारिकाएं आपस में मंत्रणा कर रही है। वहीं परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पृष्ठभूमि में हरियाली से आच्छादित मैदानी प्रदेश तथा घने वृक्षों में केले, आम, कदम आदि की अलंकृत तथा श्रेष्ठ प्रदर्शना की गई है, जिनके पीछे दूर–दराज में एक झील तथा वास्तु संरचना दिखाई दे रही है। यहां नारंगी, नीले तथा पीले रंगों के प्रकाश के द्वारा संध्याकालीन समय के प्रभाव को दर्शा रहा है। प्रस्तुत चित्र में मानव आकृतियां प्रायः लम्बी, पतली तथा अत्यंत सूक्ष्मता के साथ चित्रित की गई है, जिनमें उनके लम्बे चेहरे, नुकीली नाक, ऊंचा ढलवा माथा, मीनाकृत विशाल आंखें तथा भौंहे जो कि कनपटी तक जाती दिखाई गई हैं। पुरूष आकृति ऊंची, लम्बी, तथा अलंकृत मारवाडी पगडी एवं शाही जामा पहने हुए हैं वहीं स्त्री आकृतियों को अत्यंत कोमल, लचकदार एवं छरहारी काया के साथ झीनी ओढनी एवं शाही वस्त्राभूषणों से सुसज्जित चित्रित किया गया है, जो प्रायः यहां प्रचलित राजस्थानी सामंती संस्कृति के पहनावे को प्रदर्शित करता है।

किशनगढ़ चित्र शैली में काव्य में कल्पित रूप यौवन तथा मांसल सौंदर्य का चित्रांकन जादू भरा है। किशनगढ़ चित्र शैली में प्रायः लम्बे आकार के चित्र बने हैं। इनकी नाक 15ष्ग19ष् तक होती थी। पुरूष आकृति के मुख के पीछे एक आभा मण्डल को दर्शाया गया है जो नायक के विस्तारीत प्रभाव को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाता है। चित्र में बारीक रेखाओं तथा सौम्य रंगों का अत्यंत सुंदर प्रयोग दिखाई देता है।

नायक–नायिकाओं के मिलन के समय के प्रेमाकर्षणपूर्ण मनोभावों की परिस्थिति की चित्र में आत्मीय प्रेम, सौंदर्य तथा रस सिद्धांतों के अंश स्वरूप मनोवैज्ञानिक आधार पर श्रेष्ठ प्रस्तुति दर्शाई गई है। वहीं चित्र में कलाकार ने प्रकृति को भी अत्यंत भावुकता से देखा है तथा अलंकारी योजना को अपनाया है। प्रकृति स्वरूपों में कमल दल, सरोवर, पुष्प, घने वृक्ष, लताएं, तालाब आदि की आकर्षक संयोजनाएं दर्शाई गई हैं सम्पूर्ण चित्र में श्वेत, नीले, पीले, नारंगी तथा हरे रंग की विभिन्नताओं के साथ सौम्यता दर्शाई गई है। कलाकार अपने सशक्त रेखांकन से विषय की भावना को पूर्ण रूप से सिद्ध करने में सफल रहे हैं।

[10] Sumahendra : Splendid style of Kishangarh Painting, jaipur,1995, Page No. 16

चित्र सं.–3 : नाव पर सवार प्रेमी युगल और बागीचे में मिलन, किशनगढ, निहालचंद, 1700 ई., राष्ट्रीय संगहालय नई दिल्ली.[11]

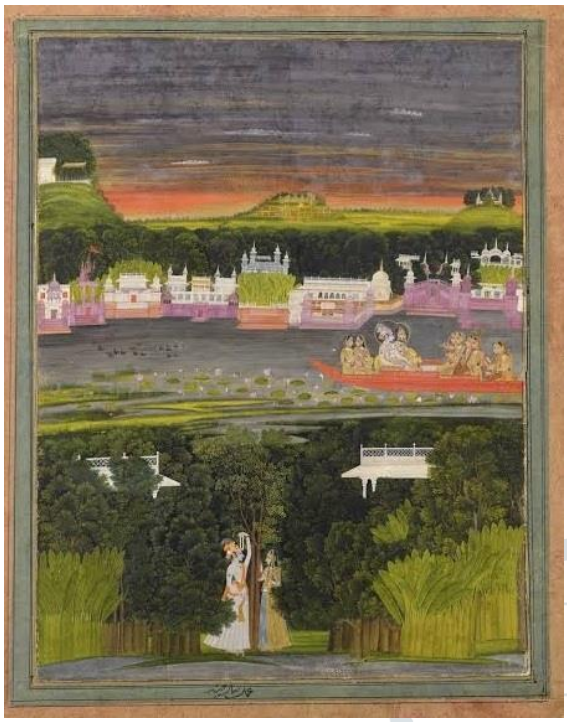

प्रस्तुत चित्र को 3 भागों में बांटकर एक कहानी के रूप में चित्रित किया गया है। जो ऊपर से नीचे की ओर आगे बढती है। चित्र के ऊपरी भाग में प्रेमी युगलों को उनके परिचारकों के साथ एक बगीचे में बैठे हुए दर्शाया गया है। दिन एवं शाम के समय की सुंदरता को दर्शाने हेतु गुलाबी तथा पीले रंग के पेच लगाये गए हैं। आगे चित्र के मध्य भाग में उन प्रेमी युगलों को एक नाव में बैठकर सुंदर कमल दलों से आच्छादित नदी को पार करते हुए दर्शाया गया है। इस नदी के एक छोर पर राजा के किले एवं महल के वास्तु स्थापत्य की परिकल्पना दिखाई देती है, जो अत्यंत ही श्रेष्ठ है। चित्र के सबसे निचले एवं तीसरे भाग में उन्हीं युगलों को घने बाग में वृक्ष के इर्द गिर्द खडे हुऐ दर्शाया गया है जो बाहरी दुनिया से छिपकर एक दुसरे के प्रति अपना आत्मीय प्रेम प्रदर्शित कर रहे हैं। मुख्य आकृति के पीछे सघन वृक्षों के मध्य दो संगमरमर के सफेद वास्तु भवनों की आकृतियां झांक रही हैं। जो चित्र तल में रंग तथा रूप से संदर्भ में एकरसता को तोडते हुए दिख रहे हैं। नायक (कृष्ण) का अपना एक हाथ ऊपर उठाकर पुष्प माला का प्रदर्शन करना इस चित्र शैली की एक अन्य विशेषता है जो प्रेम निर्माण के आसन्न चरण का संकेत देती है। प्रस्तुत चित्र में प्रकृति एवं प्रेम के चित्रण में सशक्त एवं मजबूत रेखा प्रवाह व गति रंगों की उत्तम संयोजना तथा चित्र संयोजन का तरीका उत्कृष्ट एवं सराहनीय है।

किशनगढ़ चित्रशैली के चित्रकार

17वीं शताब्दी में अनेकों कुशल चित्रकारों ने किशनगढ़ में कार्य किया था, जो अपने–अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ थे। किशनगढ के महाराजा **राज सिंह** (1706–1748) के समय मुगल बादशाह औरंगजेब के साथ अच्छे संबंध होने के कारण इस समय अनेकों कलाकार दिल्ली से यहां प्रस्थापित हुए थे। जिनमें **मुसब्बीर भगवान दास, उसका पुत्र डालचंद तथा कल्याणदास** प्रमुख थे। इन कलाकारों का जोधपुर तथा किशनगढ़ दोनों ही रियासतों में कार्य देखने को मिलता है। किशनगढ़ लघु चित्रों में आकृतियों का विशेष विस्तारण तथा प्रकृति में किशनगढ़ राज्य के विशेष विवरण, स्थान, झील, वास्तु अलंकरण, किलें, मीनारें, दरबार आदि का प्रमुख प्रचलन बन गया था। सफेद रंग के विशेष प्रयोग द्वारा हरे रंग की विभिन्न तानों तथा हरे एवं

[11] https://artsandculture.google.com

अन्य सौम्य रंगों का विभिन्न प्रयोग इन चित्रों पर मुगल प्रभाव को दर्शाता है।[12] वहीं राधा तथा नारी सौंदर्य का परिचायक चित्र **बनी ठनी** जिसके लिए किशनगढ़ लघु चित्र शैली विशेष रूप से प्रसिद्ध रही है, वह **निहालचंद** की उल्लखनिय कृति है। निहालचंद ने चित्रकारी का आरंभ राजा सावंत सिंह के दरबारी कलाकार रहते हुए लगभग 1730 ई. में किया था।[13] निहालचंद ने बेहद ही काव्यात्मक तथा कामुक शैली में कार्य किया है।[14] इसके अलावा अन्य चित्रकारों में **सीताराम, अमर चंद मेघराज, नानगराम, सूरजमल, अमरू, रामनाथ, जोशी सवाई राम तथा लाडली दास** आदि प्रसिद्ध चित्रकारों का उल्लेख मिलता है।[15] जिन्होंने किशनगढ़ लघु चित्रकला में प्रेम तथा प्रकृति की अत्यंत श्रेष्ठ परिकल्पना की प्रस्तुति को विश्वभर में अद्वितीय स्वरूप प्रदान किया।

साहित्यक अवलोकन

1 डॉ. दलजीत ने अपने अध्ययन में पाया कि भारत ने लघु चित्रण परंपराओं की एक सघन कला परंम्परा को विकसित किया है। उन्होंने किशनगढ़ चित्रकला के विषय में पाया कि यहां कलाकारों ने मानव आकृतियों तथा विशेषकर नारी आकृतियों को सभी पूर्णताओं के साथ विनम्र और सुरुचिपूर्ण चित्रिण दर्शाया गया है।

2 सुमहेंद्र ने किशनगढ़ चित्रकला की विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत करते हुए इस चित्र शैली की संम्पूर्ण कलात्मक विकास को दर्शाया है। जिसके तहत उन्होंने इस चित्रशैली में प्रेम तथा प्रकृति के सम्मोहित कर देने वाले मिलन की श्रेष्ठ तथा आत्मीयतापूर्ण व्याख्या का प्रस्तुतीकरण किया है।

3 वहीं जवाहर कला केंद्र के प्रेम चित्रण आधारित पुस्तक श्रेणी में लेखक ने राजस्थानी लघु चित्रकला में प्रेम विषय चित्रों का आधार, संगीत के सुरों का मानवीय करण कर उनकी वंश परंपरा को कथा के रूप में परिकल्पिना के दृश्य रूप को दर्शाया गया है।

4 रीता प्रताप ने अपने अध्ययन में किशनगढ़ लघु चित्र परंपराम में प्रकृति एवं आकृति विधान की विस्तृत दृष्टिकोण को दर्शाते हुए पेडों, लताओं, कुन्जों, सरोवरों के रचना सौंदर्य की मनमोहक प्रस्तुति की है।

5 नीरज जयसिंह ने अपने अध्ययन में किशनगढ़ के चित्रों में प्रदर्शित प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों के प्रत्येक पक्ष के पीछे के सौंदर्यात्मक तथा कलात्मक पक्ष को ध्यान में रखते हुए उनका विवरण उल्लेखित किया है। इन चित्रों में स्त्री पुरुष आकृतियों की संरचना एवं अंकन विषय को विस्तार पूर्वक दर्शाने हेतु आकृतियां लंबी तथा ऊंची दर्शाई गई है।

[12] वर्मा अविनाश बहादुर : भारतीय चित्रकला का इतिहास, बरेली, 1987, पृष्ठ संख्या 207–208
[13] Sumahendra : Kishangarh Painting, jaipur, 1995, Page No. 33
[14] Chitralekha Singh : Drawings of Rajasthan, delhi, 1993, Page No. 40
[15] Roda ahluwaliya : Rajput Painting,ahemdabad, 2008, Page No. 111

6 आर. ए. अग्रवाल ने अपने अध्ययन में किशनगढ़ लघु चित्रकला में प्रेम तथा प्रकृति पक्षों के रचना तकनीकी एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष पर सूक्ष्म अध्ययन करते हुए इस पर तथ्यात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। जिससे इन पक्षों के अंकन के पीछे के महत्व को समझा जा सकता है।

7 चित्रलेखा सिंह ने अपने अध्ययन में इस चित्र शैली में प्रेम एवं प्रकृति चित्रण में चित्रकारों की सृजनात्मक पक्ष का उत्तम उल्लेख प्रस्तुत किया है।

8 रोडा अहलूवालिया ने भारतीय लघु चित्रकला की विभिन्न चित्र शैलियों पर प्रकाश डालते हुए किशनगढ़ चित्र शैली के प्रमुख कलाकारों तथा उनकी कला शैली पर प्रकाश डाला है।

9 अविनाश बहादुर वर्मा ने किशनगढ़ चित्रकला के आकृति रचना से लेकर तकनीकी पक्ष का विस्तृत ब्यौरा देते हुए यहां के प्रमुख चित्रकारों तथा उनकी चित्रण विशेषताओं के विषय में विस्तार से उल्लेख किया है।

मुख्य शब्दों के अर्थ

वल्लभ संप्रदाय – भगवान विष्णु को मानने वाले व्यक्ति एवं समूह

पृष्टि मार्गी –मर्यादा मार्ग एवं सेवा प्रवृति का आचरण करने वाला साधक

नायक नायिका – प्रेमी प्रेमिका, मुख्य स्त्री–पुरुष आकृतियां

सरोवर –तालाब

कमल दल –कमल पुष्पों से लदे हुए तालाब या सरोवर

राग रागिनी –संगीत की विधाओं के मानवीय स्वरूप,

राधा माधव – कृष्ण एवं राधा

शोध में प्रयुक्त विधि

तथ्य संकलन एवं विश्लेषणात्मक वर्णन, ऐतिहासिक अनुसंधान, प्राथमिक एवं द्वितीय मूल्यांकन

उदेश्य

किशनगढ लघुचित्र शैली में निर्मित चित्रों में प्रेम एवं प्रकृति चित्रण के कलात्मक एवं सौंदर्यात्मक पक्ष को समझते हुए एक व्याख्यात्मक विवरण प्रस्तुत करना है।

निष्कर्ष

इस प्रकार किशनगढ चित्र शैली में हम पाते हैं कि यहां चित्रकारों ने प्रेम एवं प्रकृति के अंकन में पूर्ण कौशल की प्राप्ति की है। किशनगढ़ के इन चित्रों में राधा एवं कृष्ण को प्रेमी–प्रेमिकाओं का रूप देने की चेष्टा की गई है। इसका कारण नागरीदास का बनी ठनी के प्रतिक कृष्ण एवं राधा के स्वरूपों में अपनी प्रेम की अभिव्यक्ति, नवीन कलेवर तथा नवीन प्रेम क्रीडाओं की कल्पना इन चित्रों का आधार बनी। किशनगढ लघु चित्रों में नवीनता है जिससे भावाभिव्यक्ति और प्रबल हो गई है। वल्लभ सम्प्रदाय की प्रधानता ने इस प्रदेश की चित्रकला को पोषित किया। चित्र परिप्रेक्ष्य में प्रकृति के विविध रूपों का कलाकारों ने भरपूर

प्रस्तुतिकरण किया है। प्रेम तथा प्रकृति के मिलन से इन चित्रों में ऐसे आध्यात्मिक आनन्द तथा जादूगरी का आभास प्रकट हो सका है जो कि सहसा ही दर्शकों के मन को मंत्रमुग्ध करने में पूर्णरूपेण सक्षम है। इन लघु चित्रों का कलात्मक सौंदर्य कला प्रेमी के केवल मन को ही मोहित नहीं करते अपितु उनके मन में एक आत्मीय प्रेम, शांति एवं परम आनंद की तृप्ति भी करता है।